



# पशुधन संकल्प

## e - Magazine

Available online at  
<https://psem.vitalbiotech.org>

Article ID: PS/26/09

### गाय में थनैला: पहचान, कारण और बचाव



विवेक कीर्ति<sup>1</sup>, मधुदर्शी कुमार<sup>2</sup>, आकृति रानी<sup>3</sup>, अंशुल कुणाल<sup>3</sup> एवं सुरभि कुमारी<sup>3</sup>

<sup>1</sup>पशुचिकित्सा विभाग, <sup>2</sup>पशु चिकित्सा क्लिनिकल कॉम्प्लेक्स, <sup>3</sup>पशु पोषण विभाग  
बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय, पटना

#### परिचय

गाय पालना हमारे देश के ग्रामीण परिवारों की आजीविका का एक महत्वपूर्ण साधन है। गाय से मिलने वाला दूध परिवार के पोषण के साथ-साथ पशुपालक की नियमित आय का भी प्रमुख स्रोत होता है। इसलिए गाय के स्वास्थ्य में थोड़ी-सी भी समस्या सीधे पशुपालक की आर्थिक स्थिति को प्रभावित कर सकती है। गायों में होने वाली ऐसी ही एक महत्वपूर्ण बीमारी है थनैला। थनैला गाय के थन में होने वाली सूजन और संक्रमण की स्थिति है। यह बीमारी केवल थन में दर्द या सूजन तक सीमित नहीं रहती, बल्कि दूध की मात्रा और गुणवत्ता को भी प्रभावित करती है। गंभीर स्थिति में गाय का स्वास्थ्य भी बहुत खराब हो सकता है। कई बार यह बीमारी इतनी छिपी हुई होती है कि गाय का थन बाहर से बिल्कुल सामान्य दिखाई देता है, लेकिन दूध का उत्पादन धीरे-धीरे कम होता रहता है।

इसलिए प्रत्येक पशुपालक के लिए थनैले के कारण, लक्षण, उपचार और बचाव की जानकारी होना बहुत जरूरी है।



#### लेख इतिहास

Received : 24. 08.2026  
Revised : 30. 08.2026  
Accepted : 06. 09.2026



#### अनुरूपी लेखक

विवेक कीर्ति\*

E-mail ID:

vivekkirti01234@gmail.com



#### Open Access

This article is published under the terms of the  
[Creative Commons Attribution License 4.0.](#)

## थनैला क्या है?

गाय के थन में दूध बनाने वाली ग्रंथियां होती हैं। इनमें दूध बनने और बाहर निकलने की सामान्य प्रक्रिया कई सूक्ष्म संरचनाओं के माध्यम से होती है। जब इन ग्रंथियों में संक्रमण या सूजन हो जाती है, तो इस अवस्था को थनैला कहा जाता है। थनैला मुख्य रूप से सूक्ष्मजीवों के कारण हो सकता है। दूषित वातावरण, गंदे हाथ, अस्वच्छ दूध निकालने के

उपकरण, गंदा फर्श या थन पर लगी चोट के माध्यम से रोग पैदा करने वाले सूक्ष्मजीव थन के छिद्र से अंदर प्रवेश कर सकते हैं। संक्रमण के प्रति गाय का शरीर अपनी प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया शुरू करता है। इसके कारण थन में सूजन, गर्माहट और दर्द उत्पन्न हो सकता है तथा दूध की मात्रा और उसके गुणों में परिवर्तन दिखाई दे सकता है।



## थनैले के दो प्रमुख रूप—

थनैला मुख्य रूप से दो प्रकार का माना जाता है।

### 1. दिखाई देने वाला थनैला

इस प्रकार में बीमारी के लक्षण स्पष्ट दिखाई देते हैं। थन का एक या अधिक भाग सूज सकता है। वह गर्म, कठोर और छूने पर दर्दनाक हो सकता है। गाय दूध निकालते समय बेचौनी दिखा सकती है या

पैर मार सकती है। दूध में भी स्पष्ट परिवर्तन दिखाई दे सकते हैं। दूध में छोटे-छोटे गुच्छे, दाने, पानी जैसा पतलापन या असामान्य रंग दिखाई दे सकता है। कुछ गंभीर मामलों में दूध में रक्त भी दिखाई दे सकता है। यदि संक्रमण बहुत अधिक बढ़ जाए तो गाय को बुखार, भूख कम लगना, कमजोरी, पानी की कमी और अत्यधिक सुस्ती जैसी समस्याएं भी हो सकती हैं।

## 2. छिपा हुआ थनैला

यह थनैले का अधिक खतरनाक रूप माना जा सकता है क्योंकि इसमें बाहरी लक्षण बहुत कम या बिल्कुल नहीं होते। गाय सामान्य दिखाई देती है, थन भी सामान्य हो सकता है और दूध देखने में भी सामान्य लग सकता है। फिर भी दूध की मात्रा धीरे-धीरे कम हो सकती है। ऐसे मामलों का पता लगाने के लिए विशेष जांच की आवश्यकता होती है।

### थनैला होने के प्रमुख कारण

थनैले का सबसे सामान्य कारण रोग पैदा करने वाले सूक्ष्मजीव हैं। अलग-अलग परिस्थितियों में अलग-अलग प्रकार के जीवाणु संक्रमण उत्पन्न कर सकते हैं। लेकिन केवल जीवाणु ही इसके लिए जिम्मेदार नहीं होते। पशुपालन की व्यवस्था और स्वच्छता का स्तर भी बीमारी की संभावना को बहुत प्रभावित करता है।

यदि गाय जिस स्थान पर रहती है वहां गोबर, मूत्र, कीचड़ और नमी अधिक है तो थन के आसपास रोग पैदा करने वाले सूक्ष्मजीवों की संख्या बढ़ सकती है। ऐसे वातावरण में गाय के लेटने से थन दूषित होने की संभावना बढ़ जाती है।

दूध निकालने वाले व्यक्ति के हाथ गंदे हों, थन को साफ किए बिना दूध निकाला जाए या इस्तेमाल किए जाने वाले बर्तन साफ न हों तो संक्रमण का खतरा बढ़ सकता है। दूध निकालते समय थन को जोर से खींचना, दबाना या चोट पहुंचाना नुकसानदायक हो सकता है। इससे थन की प्राकृतिक सुरक्षा कमजोर हो सकती है और संक्रमण के लिए रास्ता बन सकता है।

थन या उसके छिद्र के आसपास लगी चोट, कट या घाव से सूक्ष्मजीव आसानी से अंदर प्रवेश कर सकते हैं। दूध निकालने के

तुरंत बाद थन के छिद्र को पूरी तरह बंद होने में कुछ समय लग सकता है। यदि इस समय गाय गंदे फर्श पर बैठ जाए तो संक्रमण का खतरा बढ़ जाता है। जिस गाय को पहले थनैला हो चुका है, उसमें दोबारा यह समस्या होने की संभावना बढ़ सकती है। इसलिए ऐसी गायों पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

### थनैला के लक्षण कैसे पहचानें?

पशुपालक यदि रोजाना दूध निकालते समय कुछ सामान्य बातों पर ध्यान दे तो थनैले को प्रारंभिक अवस्था में पहचाना जा सकता है। थन में अचानक सूजन आना, थन का सामान्य से अधिक गर्म महसूस होना, थन छूने पर गाय का दर्द के कारण प्रतिक्रिया देना, थन का कोई हिस्सा कठोर होना, दूध की मात्रा में अचानक कमी, दूध में गुच्छे या दाने दिखाई देना, दूध का रंग बदलना, दूध का अत्यधिक पतला दिखाई देना, दूध में रक्त दिखाई देना, दूध निकालते समय गाय का बेचौन होना, गंभीर स्थिति में बुखार आना, भूख कम होना, कमजोरी और सुस्ती, पानी की कमी के लक्षण दिखाई देना।

यदि गाय खाना छोड़ दे, बहुत कमजोर हो जाए, तेज बुखार हो या थन में अत्यधिक सूजन और दर्द हो तो पशु चिकित्सक को तुरंत बुलाना चाहिए।

**घर पर प्रारंभिक जांच—** पशुपालक को प्रत्येक गाय के दूध को ध्यान से देखना चाहिए। दूध की पहली कुछ धार अलग साफ बर्तन में निकालकर उसका निरीक्षण किया जा सकता है। यदि दूध में दाने, गुच्छे, रक्त या अन्य असामान्य परिवर्तन दिखाई दें तो इसे सामान्य नहीं मानना चाहिए। लेकिन केवल दूध को देखकर सभी प्रकार के थनैले की पहचान नहीं की जा सकती। विशेष रूप से छिपे हुए थनैले के लिए जांच आवश्यक होती है।



### उपचार के दौरान दूध का क्या करें?

यह बात प्रत्येक पशुपालक को विशेष रूप से समझनी चाहिए कि कुछ औषधियों के उपयोग के बाद निर्धारित समय तक उस गाय के दूध को मनुष्य के खाने-पीने में इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए। औषधि देने के बाद दूध को कितने समय तक अलग रखना है, यह संबंधित औषधि पर निर्भर करता है। इसलिए पशु चिकित्सक द्वारा बताए गए दूध त्याग अवधि का पूरी तरह पालन करना चाहिए। उपचार के दौरान प्राप्त दूध को दूसरे स्वस्थ पशुओं के दूध में मिलाकर बेचना भी उचित नहीं है।

### थनैला से बचाव कैसे करें?

थनैले में उपचार से अधिक महत्वपूर्ण उसका बचाव है। कुछ सरल सावधानियां अपनाकर बीमारी की संभावना को काफी कम किया जा सकता है।

दूध निकालने वाले व्यक्ति के हाथ साफ होने चाहिए। गाय के थन और उसके आसपास

की जगह को साफ करके अच्छी तरह सुखाना चाहिए। गीले कपड़े या गंदे कपड़े का बार-बार उपयोग नहीं करना चाहिए। प्रत्येक गाय के लिए साफ कपड़े का उपयोग करना बेहतर होता है। थन पर किसी प्रकार की चोट, सूजन या असामान्यता दिखाई दे तो दूध निकालने से पहले उसकी जांच करानी चाहिए।

दूध निकालने की प्रक्रिया शांत और स्वच्छ तरीके से करनी चाहिए। थन को जोर से खींचने या चोट पहुंचाने से बचना चाहिए। यदि दूध निकालने की मशीन का उपयोग किया जाता है तो उसकी नियमित सफाई और उचित रखरखाव जरूरी है। मशीन में अत्यधिक दबाव या गलत संचालन थन को नुकसान पहुंचा सकता है।

दूध निकालने के बाद थन के छिद्र के आसपास उचित कीटाणुनाशक घोल का प्रयोग संक्रमण के खतरे को कम करने में मदद कर सकता है। इसके लिए पशु चिकित्सक द्वारा सुझाए गए सुरक्षित उत्पाद का उपयोग करना चाहिए। दूध निकालने के बाद कुछ समय तक

गाय को खड़ा रखना भी उपयोगी होता है ताकि वह तुरंत गंदी सतह पर न बैठे।

थनैला रोकने के लिए पशु के रहने की जगह की स्वच्छता बहुत महत्वपूर्ण है। गोबर और मूत्र को नियमित रूप से हटाना चाहिए। फर्श पर पानी जमा नहीं होने देना चाहिए। गाय के बैठने की जगह सूखी और साफ होनी चाहिए। बिछावन सामग्री का नियमित परिवर्तन किया जाना चाहिए। विशेष रूप से वर्षा के मौसम में पशु आवास की सफाई पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता होती है क्योंकि नमी के कारण संक्रमण फैलाने वाले सूक्ष्मजीव तेजी से बढ़ सकते हैं।

गाय को संतुलित आहार और पर्याप्त स्वच्छ पानी देना उसके सामान्य स्वास्थ्य और रोग प्रतिरोधक क्षमता के लिए जरूरी है। प्रसव से पहले और प्रसव के बाद गाय की विशेष देखभाल करनी चाहिए। दूध देने वाली गायों की नियमित जांच करनी चाहिए। दूध की मात्रा में अचानक कमी को केवल भोजन की समस्या मानकर नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। यह थनैले का प्रारंभिक संकेत भी हो सकता है।

थनैला केवल एक गाय की समस्या नहीं है। यदि बीमारी का समय पर उपचार न किया जाए तो दूध उत्पादन में लंबे समय तक कमी हो सकती है। प्रभावित थन का कोई हिस्सा स्थायी रूप से कमजोर हो सकता है और भविष्य के दुग्ध उत्पादन पर भी असर पड़ सकता है। इसके अलावा, बार-बार होने वाला थनैला पशुपालक के लिए दवा, पशु चिकित्सक और अतिरिक्त देखभाल का खर्च भी बढ़ाता है। इसलिए बीमारी दिखाई देने का इंतजार करने के बजाय रोजाना की स्वच्छता और सही दुग्ध प्रबंधन को प्राथमिकता देना अधिक लाभदायक है।

### पशुपालकों के लिए जरूरी बातें

गाय के थन को हमेशा साफ रखें, दूध निकालने से पहले हाथ और बर्तन साफ करें,

दूध निकालने के बाद थन की उचित सफाई करें, गाय को गीली और गंदी जगह पर न रखें, थन में चोट या सूजन को नजरअंदाज न करें, दूध की मात्रा में अचानक कमी को गंभीरता से लें, दूध में दाने, गुच्छे या रक्त दिखाई देने पर पशु चिकित्सक से संपर्क करें, छिपे हुए थनैले की पहचान के लिए समय-समय पर जांच कराएं, बिना पशु चिकित्सक की सलाह के संक्रमणरोधी दवाओं का उपयोग न करें, उपचार के बाद दूध के उपयोग से पहले निर्धारित दूध त्याग अवधि का पालन करें।

### निष्कर्ष

गाय में थनैला एक सामान्य लेकिन आर्थिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण बीमारी है। इसकी सबसे बड़ी चुनौती यह है कि हर बार इसके लक्षण बाहर से दिखाई नहीं देते। इसलिए दूध की मात्रा, दूध की गुणवत्ता और थन की सामान्य स्थिति पर नियमित नजर रखना आवश्यक है। स्वच्छ हाथ, साफ बर्तन, सही तरीके से दूध निकालना, थन की उचित सफाई, सूखा और स्वच्छ पशु आवास तथा समय पर पशु चिकित्सकीय जांचकृये सभी उपाय थनैले से बचाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पशुपालक को यह समझना चाहिए कि थनैला होने के बाद केवल दवा देना ही समाधान नहीं है। बीमारी क्यों हुई, इसकी वजह को दूर करना भी उतना ही जरूरी है। यदि गाय के थन में तेज सूजन, अत्यधिक दर्द, दूध में रक्त, तेज बुखार, भूख बंद होना या अचानक गंभीर कमजोरी दिखाई दे तो घरेलू उपचार में समय न गंवाकर तुरंत पशु चिकित्सक से संपर्क करना चाहिए। स्वच्छ पशु आवास, स्वच्छ दुग्ध उत्पादन और समय पर उपचारकृस्वस्थ गाय, सुरक्षित दूध और बेहतर पशुपालक आय की तीन महत्वपूर्ण कुंजी हैं।